महामृत्युंजय

प्राण प्रतिष्ठा, शिवपूजा, जप विधि
मन्त्र का अर्थ एवं आरती

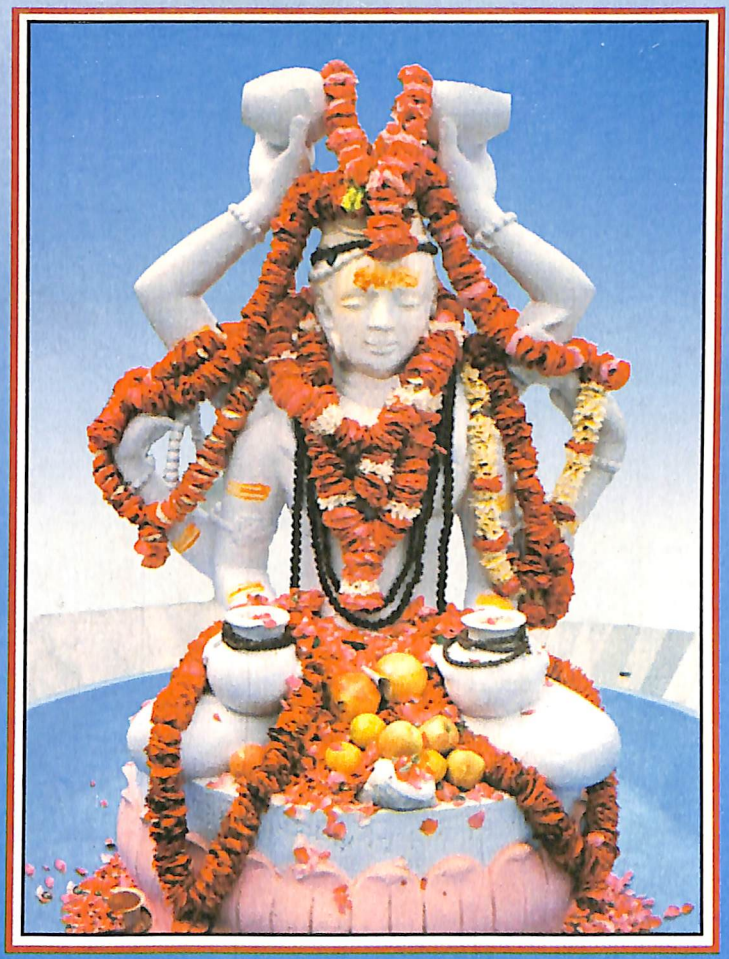

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

महामृत्युंजय

प्राण प्रतिष्ठा, शिव पूजा, जप विधि
मन्त्र का अर्थ एवं आरती

सम्पादक :
पं. ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी

मूल्य : 10.00

प्रकाशक :
रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार
☎ (0133) 426297

दिल्ली में विक्रेता :
गगन बुक डिपो, 4694, बल्लीमारान, दिल्ली-6 ☎ 3950635

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
१. महामृत्युंजय के उपयोगी विषय	**३**
कार्यानुसार जपसंख्या	३
जप के लिए विशेष	४
होम के लिए	५
पार्थिवपूजा विधि:	७
अथ ध्यानम्	९
प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र	९
२. शिवपूजा विधान	**११**
पूजा उपचार क्रम	११
शिव नीराजन (आरती)	१७
३. महामृत्युंजय जप विधान	**२०**
अथ ध्यानम्	२३
श्री महामृत्युंजय जप-मन्त्र	२४
४. महामृत्युंजय मन्त्र (लघु)	**२५**
५. महामृत्युंजय संजीवनी मन्त्र	**२५**
६. महामृत्युंजय मन्त्र के अन्य रूप एवं अर्थ	**२५**
७. आरती श्री शिव जी की	**३१**
८. श्री शिव पंचाक्षर स्तोत्र	**३२**

महामृत्युंजय के उपयोगी विषय

महामृत्युंजय के प्रयोग निम्न कार्यों में अधिक उपयोगी हैं—

१. जन्मकुंडली, लग्नकुंडली, वर्षकुंडली, गोचरकुंडली, दशा, महादशा, अन्तर्दशा, स्थूलदशा, सूक्ष्मदशा में होने वाले सूर्यादि नवग्रहों द्वारा शरीर पीड़ा हो।

२. महामारी आदि का प्रकोप हो।

३. इष्ट-मित्रों से वियोग की सम्भावना हो या हो गया हो, भाई-बन्धु से विद्रोह हो। दोषारोपण या कलंकित हो, चित्त उद्विग्न हो, द्रव्य नष्ट होता हो, रोग दीर्घकाल से पिंड न छोड़ता हो।

४. विवाह-मेलापक में नाड़ी आदि दोष हों, षडाष्टक दोष हों।

५. राजभय, चोरभय, परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्र भय हो।

६. मन धर्म से विचलित हो, अशान्ति हो।

७. त्रिदोष, दुर्निवार्य रोग, ज्वरपीड़ा, दुःस्वप्न होते हों। आदि कारणों में महामृत्युंजय जप करे या ब्राह्मण से करावें।

कार्यानुसार जपसंख्या

किसी प्रकार से महामारी, जैसे—हैजा, प्लेग, शीतला या अन्य प्रकार के महा उपद्रवों की शान्ति के लिए महामृत्युंजय का **एक करोड़ जप** कराना चाहिए। जब सामान्य रोग हो, दुःस्वप्न

होते हों, पुत्र प्राप्ति के लिए, स्त्री-प्राप्ति के लिए, पति-प्राप्ति के लिए, ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए, मान-सम्मान प्राप्ति के लिए, इष्ट सिद्धि या मन शान्ति के लिए **सवालाख जप** करना चाहिए। अपमृत्यु का भय हो, संदिग्धावस्था, भय की आशंका, कलंकित अवस्था में दस हजार जप कराना चाहिए। यात्रा आदि में भय उपस्थित हो तो **एक हजार जप** कराना चाहिए। यात्रा आदि में भय उपस्थित हो तो भी **एक हजार जप** कराना चाहिए।

जप के लिए विशेष

यः शास्त्रविधि मृत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगितम्॥

इस महावाक्यानुसार शास्त्र की विधि के अनुसार पूजन-अर्चन करना चाहिए। मनमानी ढंग से करना या कराना हानिप्रद होता है।

प्रयोग कराने के समय शुभ मुहुर्त, चन्द्र-तारा आदि बलों को दिखाकर तब अनुष्ठान-पुनश्चरण प्रयोग कराना चाहिए। प्रयोग कराते समय शिव-मन्दिर देवालय, सिद्धस्थान, नदीतट, बिल्व, अश्वत्थवृक्ष के स्थान पर सफाई कराकर लीप-पोतकर अनुष्ठान आरम्भ करें।

देवालय, सिद्धस्थान, शिवमन्दिर में तो पार्थिवेश्वर की आवश्यकता नहीं है—किन्तु और सभी स्थानों पर पार्थिवेश्वर शिवलिंग निर्माण करके ही महामृत्युंजय आदि का जप विधान सहित करना कराना चाहिए।

ब्राह्मण द्वारा करावें तो प्रयोगविधि के ज्ञाता, उदार, दयालु, परोपकारी, सन्तोषी, देवाराधक जितेन्द्रिय, विषम संख्यात्मक ब्राह्मण

होने चाहिए। यजमान भी शुद्धचित्त, शान्त, विश्वास रखने वाला, संयमी, जब तक अनुष्ठान होता रहे जितेन्द्रिय होकर रहे।

प्रयोग पुरश्चरणात्मक हो तो प्रतिदिन की संख्या समान होनी चाहिए, किसी दिन जप अधिक किसी दिन कम नहीं होना चाहिए—इसी प्रकार ब्राह्मण भी प्रतिदिन उतनी ही संख्या में रहें जितनों ने प्रथमदिन पुरश्चरण प्रारम्भ किया हो, इसमें उलट-फेर-कमी-बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण होने पर अर्थात् पुरश्चरण समाप्ति पर जितना जप हुआ हो उसका दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश या कार्यानुसार न्यूनाधिक रूप में ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए।

यदि पुरश्चरण एक ही दिन का हो, हवन करने में कठिनाई हो, हवन न हो सके तो दशांश जप अधिक कराना चाहिए। श्रद्धा-भक्ति-विश्वास के साथ इस कार्य को करने से सर्वदा सफलता ही मिलती है।

विधर्मियों के संसर्ग से विधर्मी भाषा का पठन-पाठन करने से नास्तिकता की वृद्धि हो गई है और इन्हीं कारणों से मनुष्य सदनुष्ठान से विचलित हैं और श्रद्धा-भक्ति व विश्वासहीन रहते हैं। जिन कारणों से उनको फल मिलना तो दुर्लभ हो जाता है किन्तु उनके कटुवचनों से और भी आपत्तियों का सामना करना पड़ता है। अतः जप में पूर्ण विश्वास रखना ही सर्वोत्तम है।

होम के लिए

आहुति के अनुसार-वेदी (स्थंडिल) बनावे उस पर कुशकण्डिका, क्रमानुसार अग्निस्थापन कर शास्त्रोक्त विधि से

यथाशक्ति यथोचित द्रव्यों से हवन कराना चाहिए, हवन सामग्री सामान्यतया यव चावल, तिल-घी, खांड़ और मेवा यही प्रधान हैं। परन्तु कामना विशेष हो और हवनद्रव्य सवा लक्ष्य जप हो तो—बिल्वफल, तिल, खीर, पीलीसरसों, दूध-दही, दूब से आहुति दें। बड़, पलास, खैर की लकड़ी-मधु (शहद) में डुबोकर आहुति दें। रोगशान्ति के लिए—शत्रु से विजय प्राप्ति के लिए, धन-सम्पत्ति और पुत्र-कलत्र पौत्रादि की दीर्घायु कामना के लिए गुरुच का ४-४ अंगुल का टुकड़ा लेकर उसी का हवन करावे। लक्ष्मी प्राप्ति के लिए बिल्वफल का हवन करावे। ब्रह्मत्वसिद्धि के लिए पलाश की समिधा का हवन घृत सहित करावे। धन की प्राप्ति के लिए, वट की लकड़ी का हवन, शोभावृद्धि के लिए तिलों की आहुति, शत्रुनाशार्थ सरसों की आहुति दे। यशस्वी बनने के लिए खीर की आहुति करावे। कृत्या (पिशाच बाधा) का नाश कराने के लिए, मृत्यु भय दूर करने के लिए, दही से आहुति करावे, रोगक्षय की कामना के लिए ३-३ दूर्बा से आहुति दे। ज्वरशान्ति के लिए, अपामार्ग की लकड़ी और खीर की आहुति दे। अपने वश में करना हो तो गाय के दूध-घी से दुर्गा की आहुति देवे, सर्व रोगों की शान्ति के लिए, काश्मरी की ३-३ समिधा तथा दूध और चावल की आहुति दिलावे। मन्त्रोच्चारण के साथ अन्त में स्वाहा शब्द उच्चारण करके आहुति देवें। हवन समाप्ति के बाद अर्घ्य पात्र में या और पात्र में जल-दूध मिश्रित रखकर अन्जली से तर्पण करें और उसी प्रकार तर्पण समाप्त होने पर दूर्बाकुरों से अपने ऊपर या यजमान के ऊपर मार्जन करें।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए मनः संकल्प या यजमान

द्वारा संकल्प लेकर तब कार्य की सिद्धि के लिए अनुष्ठान में लगना चाहिए।

***संकल्प*— ॐ तत्सदद्यैतस्य, महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे, अमुक मासे, अमुकपक्षे अमुक तिथौ. अमुकवासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नोहं-अमुकशर्माहं ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराण तन्त्रोक्त फलप्राप्तये मम जन्मवर्ष-मास-दिनगोचराष्टकऽवर्गदशान्तर्शादिषु ये अनिष्ट फलकारकाः ग्रहास्तेषामनुकूलतासिद्धयर्थं सकल-आधि-व्याधि-प्रशमनपूर्वक दीर्घायुर्विपुल-बल पुष्टि नैरुज्यादि सकलाभीष्टसिद्धये श्रीमन्महामृत्युंजय प्रीत्यर्थं यथा (शत-सहस्र-अयुत-लक्षादि) संख्याक श्रीमन्महामृत्युंजय मन्त्र जप महंकरिष्ये। (अथवा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये)**

(वा-विषूचिकादि जनमारोपसर्ग शांत्यर्थवा-वृष्टिकामार्थ वा अमुकाभियोग निवृत्यर्थ। वा दुःस्वप्न निरसनार्थं। वा-निर्विघ्न दिग्यात्रा सिद्धयर्थ प्रति सम्मुख शुक्रदोष दूरी करणार्थ। वा काकमैथुन दर्शनादि सूचित सर्वारिष्ट निवृत्यर्थं। वा पल्लीपतन-सरटारोहण अमुक दृष्टांग स्फुरण जनित-अशुभफल विनाशार्थं। वा-दीर्घायुः पुत्र प्राप्त्यर्थं। यथेच्छ धन लाभार्थं। अमुक कामना सिद्धयर्थं अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युंजयमन्त्र जपमहं करिष्ये)। (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये।)

पार्थिवपूजा विधिः

आचम्य-प्राणनायम्य, देशकालौसंकीर्त्य—

आचमन प्राणयाम करके संकल्प करें—

***संकल्प*—अत्राद्य महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे**

अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं अमुक कामोहं श्री पार्थिवेश्वर शिवलिंग पूजनमहं करिष्ये।

विभूति रुद्राक्ष धारणं कृत्वा—(भस्म और रुद्राक्ष माला धारण करें)।

भूमि प्रार्थना—सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपं मृत्तिकामिमाम्। ग्रहीष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे॥ ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः॥

मृत्तिका ग्रहण मन्त्रः—ॐ हराय नमः (शुचिस्थानाद् मृदमाहृत्य)।

मृत्तिका में जल छोड़ने का मन्त्र—बं इत्यमृतवीजाभि मन्त्रित जलप्रक्षेपेण संपीड्य।

शिवलिंग बनाने का मन्त्र—ॐ महेश्वरायनमः इति लिंग कृत्वा। स्वपुरतः

लिंग स्थापन करें—ॐ शूल पाणये नमः इति पीठादौ प्रतिष्ठाप्य-प्राणानायम्य।

विनियोग जल से छोड़े—

ॐ अस्य श्री शिव पंचाक्षर मंत्रस्य वामदेव ऋषिरनष्टुप् छंदः श्री सदाशिवो देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं मम सांबसदाशिव प्रीत्यर्थे न्यासे-पूजने जपे विनियोगः।

न्यास मन्त्रः—ॐ वामदेव ऋषयेनमः सिरसि, ॐ अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे। ॐ श्री सांब सदाशिव देवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। ॐ शक्तये नमः पादयोः।

ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वांगे।

ॐ नं तत्पुरुषाय नमो हृदये। ॐ मं अघोराय नमः पादयोः। ॐ शिं सद्यो जाताय नमो गुह्ये। ॐ वां वामदेवाय नमो मूर्ध्नि। ॐ यं ईशानायनमो मुखे।

ॐ ॐ अंगुष्ठाय नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ शिं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ यं करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्।

ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिर से स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचाय हुं। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं राजतिगिरि निभं चारुचन्द्रा वतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्र कृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

इतिध्यात्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्॥

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र

ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि क्रिया मय शरीरम्, प्राणाख्या देवता, आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, देव प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरशि। ऋग्यजुः सामच्छन्दसेभ्यो नमो मुखे। प्राणख्या देवतायै नमो हृदि। आं बीजाय नमो गुह्ये। ह्रीं शक्तय: नमः पादयोः। क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। इति कृत्वा—ॐ आं ह्रीं क्रौं यं

रं लं वं शं षं हं सः शिवस्य प्राणा इह प्राणाः॥ ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि। ॐ वाङ्मनस्त्वकचक्षुः क्षोत्र जिह्वा घ्राण पाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा शिवलिङ्ग स्पृशन्।

(प्राणप्रतिष्ठा करके शिवलिंग स्पर्श करें आह्वान करें)।

ॐ भूः पुरुषं सांब सदाशिव मावाहयामि ॐ भुवः पुरुषं सांब सदाशिव मावाहयामि। ॐ स्वः पुरुषं सांब सदाशिव मावाहयामि। (इत्यावाह्य)

***संक्षिप्त पूजनम्*— ॐ पिनाकधारिणे नमः इति स्नानम्। ॐ शिवय नमः इति गन्धं, अक्षतं, बिल्वपत्रं-पुष्पं-धूप-दीप-नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ पशुपतये नमः नीराजनं समर्पयामि। ॐ महादेवाय नमः इति संहार मुद्रया विसर्जनम्।**

विशेष—इस प्रकार प्रतिदिन पार्थिव पूजन करना चाहिए—यदि साथ में जप भी करते हों तो प्रथम जप करके तब संहारमुद्रा से शिवलिंग का विसर्जन कराना चाहिए।

शिवपूजा विधान

शिव मन्दिर में जप करना हो या रुद्राभिषेक करना हो या सहस्रघटाभिषेक करना हो तो शिव मूर्ति का पूजन क्रम इस प्रकार करते हैं—

शिवालये, देवालये वा पार्थिवेश्वर शिव सन्निधौ उपविश्य पूजनसामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य। आचम्य-प्राणानायम्य-देशकालौ संकीर्त्य-अमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्मा अमुक कामोऽहं शिव पूजां करिष्ये। तत्रादौ गणेश गौर्यादिनां नाममन्त्रेण सम्पूजनं शिवपूजनं च कुर्यात्।

शिवालय, देवालय वा पार्थिवेश्वर शिवलिंग के समीप बैठकर पूजन सामग्री का सम्प्रोक्षण करके आचमन-प्राणायम करें—संकल्प पढ़ें। गणेश-गौरी का नाममन्त्र से पूजन करके शिवलिंग का पूजन करें।

पूजा उपचार क्रम

१. अष्टात्रिंशद उपचाराः

अर्घ्यं पाद्यमाचमनीयं मधुपर्कमुपस्पृशम्।
स्नानं नीराजनं वस्त्रमाचामनं चोपवीतकम्॥ १॥
पुनराचमनं भूषा दर्पणालोकनं ततः।
गन्ध पुष्पे धूप दीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात्॥ २॥
पानीयं तोय माचामः हस्तवासस्ततः परम्।

ताम्बूलमनुलेपं च पुष्पदानं ततः पुनः॥ ३॥
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं स्तुतिश्चैव प्रदक्षिणा।
पुष्पांजलि नमस्कारवष्टात्रिंशत्समोरितः॥ ४॥

क्वचित् त्रयोविंशत्युपचाराः

अत्रएता एव गृहीता। परञ्चैताः पूजाः षोडशांग न्यासपूर्विका ग्राह्यः।

पूजायां ग्राह्य पुष्पादीनिः

समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्।
पूजायां पंचरात्रं स्या दशरात्रं च विल्वकम्॥ १॥
एकादशाहं तुलसी नैव पर्य्युषिताभवेत्।
जाती शमी कुशा कङ्गुमल्लिकाकरवीरकम्॥ २॥
चम्पकं-वकुलं चैव पद्म विल्वं पवित्रिकम्।
एतानि सर्व देवानां संग्राह्याणि समानि च॥ ३॥

२. षोडशोपचार क्रमः

आसनं स्वागतंचार्घ्यां पाद्यमाचमनीयकम्।
मधुपर्कार्पणं स्नानं वसनाभरणानि च॥ १॥
सुगन्धः सुमनो धूपो दीपो नैवेद्य एव च।
माल्यानुलेपने चैव नमस्कारा विसर्जनम्॥ २॥

नागदेव क्रमः

आवाहनासने पाद्यमर्घ्यामाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीते च गन्धमाल्यादिभिःक्रमात्॥ १॥
धूप दीपं च नैवेद्यं नमस्कारं प्रदक्षिणम्।
उद्वासनं षोडशकमेवं देवार्चने विधिः॥ २॥

३. दशोपचार क्रमः

अर्घ्यं पाद्यंचाचमीनीयं स्नानं वस्त्र निवेदनम्।
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारा दशक्रमात्॥ १॥

४. पंचोपचार क्रमः (जाबालिः)

ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम्।
नीराजनं प्रणामश्च पंचपूजोपचारकः॥ २॥
(अन्यच्च) गन्धपुष्पे धूप दीपौ नैवेद्यं इति च क्रमात्॥ २॥

पाद्यम्

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथोयेऽअस्य सत्वानो हंतेभ्योऽकर नमः॥
ॐ शिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्यम्

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह।
बृहत्युष्णीहा ककुप्सूचीभिः सम्यन्तुत्वा॥
ॐ शिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमनम्

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगधिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्व्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात्॥
ॐ शिवाय नमः आचनमं समर्पयामि॥

स्नानम्

ॐ वरुणस्योतम्भनमसि वरुणस्य
स्कम्भसर्जनीस्थो वरणस्यऽऋतसदन्यसि।
वरुणस्यऽऋऽत सदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद॥

ॐ शिवाय नमः जलस्नानं समर्पयामि॥

दुग्धस्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्त रिक्षेपयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥
ॐ शिवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि॥

दधिस्नानम्

ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः।
सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽआयू ꣳषितारिषत॥
ॐ शिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि॥

घृतस्नानम्

ॐ घृतङ्घृतपावानः पिबतव्वसांव्वसा पावानः।
पिबतानारिक्षस्य हवि रसि स्वाहा॥
दिशः प्रदिशऽआदिशोव्विदिशऽउद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा।
ॐ शिवाय नमः घृतस्नानम् समर्पयामि॥

मधुस्नानम्

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषेसोमधुमत्पार्थिव ꣳरजः। मधुद्यौ रस्तुनः पिता॥
मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावोभवन्तुनः।
ॐ शिवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि॥

शर्करास्नानम्

ॐ अपा ꣳरस मुद्वयस ꣳसूर्ये सन्त ꣳसमाहितम।
अपाठःरसस्य योरसस्तम्बोगृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो-

सीन्द्रायत्वाजुष्टतमम्॥

ॐ शिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि॥

पंचामृतस्नानम्

ॐ पंचनद्यः सरस्वतींमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्॥
ॐ शिवाय नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि॥

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धबालः सर्व्वशुद्धबालो मणि बालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः॥

ॐ शिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रोपवस्त्रम्

ॐ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्।
याश्चते हस्तऽइषवः पराता भगवो वपः॥
ॐ शिवाय नमः वस्त्रोपवस्त्रंसमर्पयामि॥

यज्ञोपवीतम्

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचौव्वेनऽआवः।
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः॥
ॐ शिवाय नमः यज्ञोपवीतम् समर्पयामि॥

गन्धम्

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो
भवाय च रुद्राय च नमः कपर्दिने।
ॐ शिवाय नमः गन्धं समर्पयामि॥

अक्षतम्

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
ॐ शिवाय नमः अक्षतान समर्पयामि॥

पुष्पमालां

ॐ नमः पार्याय चा वार्य्याय च नमः प्रतरणाय चांत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च नमः।
ॐ शिवाय नमः पुष्पमालां-पुष्पंसमर्पयामि॥

विल्वपत्रम्

ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च बरूथिने च नमः।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्या च नमो धृष्णवे॥
ॐ शिवाय नमः विल्वपत्रम् समर्पयामि॥

धूपम्

ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते चे नमो ह्रस्वाय।
ॐ शिवाय नमः धूपं समर्पयामि॥

दीपम्

ॐ नमः आशवे चाजिराय च नमः शीघ्रयाय च शीम्याय च नमः ऊर्म्याय चा वसवन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।
ॐ शिवाय नमः दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्यम्

ॐ नमो ज्येष्ठाय च नमः पूर्वजाय चा परजाय च नमो मध्यमाय चा प्रगल्भाय च नमो जघन्याय च सोम्याय च।

ॐ शिवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि॥

आचमनम्

ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
ॐ शिवाय नमः आचमनं समर्पयामि॥

ताम्बूलम्

ॐ इमारुद्राय तव से कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः।
यथा नः शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टम् ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥
ॐ शिवाय नमः तांबूलम् समर्पयामि॥

दक्षिणां

ॐ हिरणयगर्भः समवर्तताग्रेभूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्या मुते मां कस्मै देवाय हाविषा विधेम॥
ॐ शिवाय नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि॥

शिव नीराजन (आरती)

ॐ जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालयं नित्यं कृपया जगदीशा॥
हर हर हर महादेव॥ १॥

कैलासे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने।
गुंजति मधुकरपुंजे कुंज वने गहने॥
कोकिल कंजित खेलत हंसावन ललिता।

रचयति कला कलापं नृत्यसि मद सहिता॥
हर हर हर महादेव॥ २॥
तस्मिन् ललित सुदर्शन शाला मणि रचिता।
तन्मध्ये हर निकटे गौरीमुदसहिता॥
क्रीडां रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुरसेवित नामयते शीशम्॥
हर हर हर महादेव॥ ३॥
कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहितम्।
त्रिनयन शशिधर मौलिं विषधर कण्ठयुतम्॥
सुन्दर जटाकलापं पावकयुतभालं।
डमरू त्रिशूल पिनाकं करधृत नृकपालम्॥
हर हर हर महादेव॥ ४॥
मुण्डै रचयति मालां पन्नग उपवीतं।
वाम विभागे गिरिजा रूपं अतिललितं॥
सुन्दर सकल शरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वज रूपं तापत्रय हरणम्॥
हर हर हर महादेव॥ ५॥

ॐ शिवाय नमः नीराजनं समर्पयामि॥

पुष्पांजलिम् हस्ते फल पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्या सत्।
तेहना कं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
ॐ शिवाय नमः मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि॥

प्रदक्षिणा

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषगिणः।

तेषा छं सहस्त्र योजनेबधन्वानि तन्मसि॥ (वैदिक)
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

क्षमा प्रार्थना

करचरण कृतं वाक्कायजं कर्म जं वा।
श्रवण नयन जं वा मानसं वाऽपराधम्॥
विहितमविहितं वा सर्वमेतत क्षमस्वे।
जय जय करुणाब्धे! श्रीमहादेव! शम्भो॥
ॐ शिवाय नमः क्षमा प्रार्थना समर्पयामि।

इस प्रकार पार्थिवेश्वर शिव पूजन की क्रिया भगवान् शिव की प्रसन्नता के लिए उन्हें समर्पण करता हूँ।

ψ

संजीवनी विद्या महामृत्युंजय प्रयोग

लेखक : योगीराज यशपाल जी

जो सज्जन महामृत्युंजय संजीवनी विद्या के विषय में विस्तार से जानना चाहते हैं तथा महामृत्युंजय स्तोत्र, महामृत्युंजय कवच का पाठ भी करना चाहें और इस भारतीय अलौकिक विद्या की अनेकानेक खूबियों के प्रयोग द्वारा स्वयं लाभ उठाते हुए जनसेवा भी करना चाहें, वह इस पुस्तक को मँगाकर अवश्य अवलोकन करें। मँगाने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें—

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

महामृत्युंजय जप विधान

कृत नित्यक्रियो जपकर्ता स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य धृत रुद्राक्षभस्मत्रिपुण्डः आचम्य। प्राणानायम्य।

जप करने वाला अपने आसन पर पूर्वमुख वा उत्तर मुख करके भस्म का त्रिपुंड्र लगाकर रुद्राक्ष माला धारण करके बैठे। आचमन प्राणायाम करें।

संकल्प— **ॐ विष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यः श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयेपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वतेवाराह कल्पे वैवस्तमन्वन्तरे अष्टामविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे-विक्रमशके वौद्धावतारे अमुकऋतौ अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ अमुकवासरे, अमुक करणे, अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुकराशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशि स्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहग्रण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुक शर्मा (वर्मा, गुप्तः दासो) हं मम जन्मलग्नाच्चन्द्रलग्नाद् वर्ष मास दिन गोचराष्टक वर्ग दशान्तर्दशादिषु चतुर्थाऽष्टमद्वादशस्थान् स्थित क्रूरग्रहास्तेषां अनिष्टफल शान्ति पूर्वकं द्वितीयसप्तमएकादशस्थानस्थित सकल शुभफल प्राप्त्यर्थ श्री**

महामृत्युंजय रुद्रदेवता प्रीत्यर्थ यथा (शत सहस्त्र अयुत लक्ष कोटयादि) संख्याक श्री मन्महामृत्युंजय मन्त्र जप महं करिष्ये (वा ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये)।

विनियोग—हाथ में जल लेकर पढ़ कर छोड़ें।

ॐ अस्य श्री महामृत्युंजयमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री त्र्यम्बकरुद्रो देवता, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, मम अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ वसिष्ठऋषयेनमः शिरसि। अनुष्टुप्छंदसे नमो मुखे॥ श्रींत्रय्म्बकरुद्रदेवतायै नमो हृदि। श्रीं बीजायनमो गृह्ये॥ ह्रींशक्तये नमः पादयोः। इति ऋष्यादिन्यासः॥

अथकरन्यासः—ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्रायशूलपाणये स्वाहा-अंगुष्ठाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रौं ऊं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये.मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा-मध्यमाभ्यां वषट्॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साम मन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयायज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अधीरास्त्राय करतलकर पृष्ठाभ्यां फट्। इति करन्यासः॥

हृदयादिन्यासः—ॐ ह्रौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बक ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा। हृदयाय नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवाय। शिरसे स्वाहा ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् ॐ नमो भगवते रुदाय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा॥ शिखायै वषट्॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भुर्भूवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रां कवचाय हुं॥ ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रौं ॐ जू सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष-रक्ष अघोरास्त्राय फट्॥ (इति हृदयादिन्यासः)

अक्षरन्यासः—त्र्यं नमः दक्षिण चरणाग्रे। बं नमः। कं नमः, यं नमः, जां नमः दक्षिण चरण सन्धि चतुष्केषु। मं नमः वाम चरणाग्रे। हें नमः, सुं नम, नमः, गं नमः, धिं नमः, वाम चरण सन्धिचतुष्केषु। पुं नमः गुह्ये। ष्टिं नमः, आधारे। वं नमः जठरे। द्धं नमः हृदये। नं नमः कण्ठे। ॐ नमः दक्षिणकराग्रे। वां नमः। रूं नमः। कं नमः। मिं नमःदक्षिणकरसन्धि चतुष्केषु। वं नमः वामकराग्रे। बं नमः, धं नमः नां नमः मृं नमः वामकरसन्धि चतुष्केषु। त्यों नमः वदने। मुं नमः, ओष्ठयोः। क्षीं नमः घ्राणयोः। यं नमः दृशोः। मां नमः श्रवणयोः। मृं नमः भ्रुवोः। तां नमः शिरसि। (इति अक्षरन्यासः)

अथ पदन्यासः—ॐ त्र्यम्बकं शिरसि। यजामहे भ्रुवोः।

सुगन्धिं दृशोः। पुष्टिवर्धनं मुखे। उर्वारुकं कण्ठे। मिवं हृदये। बन्धनात् उदरे। मृत्योः गुह्ये। मुक्षीय ऊर्वोः। मां जाह्नवोः। अमृतात् पादयोः। (इतिपदन्यासः)

अथ ध्यानम्

चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद,
हस्ताब्जेन दधत्सु दिव्य ममलं हास्यास्य पङ्केरुहम्।
सूर्येन्द्वाग्नि विलोचनं करतले पाशाऽक्षसूत्रांकुशां,
भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरे॥ १॥

अर्थ—अपने दोनों हाथों में धारण किए दोनों कुम्भों से निकलते जल से अपने मस्तक का सिंचन करते हुए अपनी गोद के दोनों हाथों पर कलश लिए एक हाथ से स्फटिक माला, दूसरे हाथ में मृग, तीसरे हाथ में कमल धारण एवं मस्तक पर चन्द्र से अमृत बहते अपने शरीर का अमृत से सिंचन करते त्रिनेत्रधारी शिव गिरिजा सहित श्रीमृत्युञ्जय भगवान् की आराधना करता हूँ।

इति ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य। ध्यान कर मानसोपचार पूजन करे।

गन्धं—ॐ लं पृथिव्यात्मकं समर्पयामि।

धूपं—ॐ हं आकाशात्मक धूपं समर्पयामि।

दीपं—ॐ रं तेजोरूपं दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यं—ॐ वं अमृतात्मक नैवेद्यं समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पांजलिः—ॐ सं सर्वात्मकं, मंत्रपुष्पांजलि समर्पयामि।

श्री महामृत्युंजय जप-मन्त्र

ॐह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। भूर्भुवःस्वरोम जूं सः ह्रौं ॐ॥

एतद् यथासंख्यं जपित्वा पुनर्न्यास कृत्वा जपं भगवन्तमहामृत्युंजय देवतायै समर्पयेत्॥

इस मन्त्र का यथा संख्या जप करे पुनः न्यास करे और जप भगवान्मृत्यञ्जय रुद्र देवता के दक्षिण हस्त में समर्पण करें।

***प्रार्थना*—गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणामत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु ये देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः॥**

***क्षमाप्रार्थना*—करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितविहितं वा सर्व मेतत् क्षमस्व। जय जय करुणाब्धे! श्रीमहादेव! शम्भो!**

अनेन श्री महामृत्युंजय जपाख्येन कर्मणा भगवान् श्री महामृत्युंजय साम्बसदाशिवः प्रीयतां नमम—(से जल छोड़ें)।

अनेन जप सांगता सिध्यर्थं यथा कामनाद्रव्येण महामृत्यंजय मंत्रेण जपदशांश हवनं, तद्दशांश तर्पणं, तद्दशांश मार्जनं, तद्दशांश ब्राह्मण भोजनं च करिष्ये।

॥ महामृत्युंजय जपविधान समाप्त॥

महामृत्युंजय मन्त्र (लघु)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

महामृत्युंजय संजीवनी मन्त्र

ॐ ह्रौं ॐ जूँ ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।
ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूँ ॐ ह्रौं ॐ।

महामृत्युंजय मन्त्र के अन्य रूप एवं अर्थ

काम्य उपासना में महामृत्युंजय मन्त्रों का जपादि किया जाता है। इसमें कौन-कौन से मन्त्र जपे जाते हैं यह तथ्य सर्व साधारण के लिए जान लेना अत्यधिक आवश्यक है अतः ध्यान दें कि—

महामृत्युंजय एकाक्षरी मन्त्र 'ह्रौं'।

महामृत्युंजय का त्र्यक्षरी मन्त्र 'ॐ जूं सः'।

महामृत्युंजय का चतुरक्षरी मन्त्र 'ॐ वं जूं सः'।

महामृत्युंजय का नवाक्षरी मन्त्र 'ॐ जूं सः पालय पालय'।

महामृत्युंजय का दशाक्षरी मन्त्र **'ॐ जूं सः मां पालय पालय'**। इस मन्त्र का स्वयं के लिए जप इसी भाँति होगा। यदि

किसी अन्य व्यक्ति के लिए यह जप किया जा रहा हो तो 'मां' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लें।

महामृत्युंजय का पंच दशाक्षरी मंत्र—'**ॐ जूं सः मां (या अमुकं) पालय पालय सः जूं ॐ।**'

महामृत्युंजय का द्वात्रिंशाक्षरी मन्त्र वेदोक्त मन्त्र है जो कि निम्नलिखित है—

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्युत्योर्मुक्षीय माऽमृतात॥

उपरोक्त द्वात्रिंशाक्षरी मन्त्र का विचार—

इस मन्त्र में आए प्रत्येक शब्द का स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि शब्द ही मन्त्र है और मन्त्र ही शक्ति है।

इस मन्त्र में से सबसे पहले '**त्र**' शब्द आता है यह शब्द ध्रुव वसु का बोधक है।

इसके बाद '**यम**' शब्द आता है जो कि अध्वर वसु का बोधक है।

इसी भाँति क्रमशः '**ब**' सोम वसु का

'**कम्**' वरुण का।	'**य**' वायु का।
'**ज**' अग्नि का।	'**म**' शक्ति का।
'**हे**' प्रभास का।	'**सु**' वीरभद्र का।
'**ग**' शम्भु का।	'**न्धिम्**' गिरीश का।
'**पु**' अजैक का।	'**ष्टि**' अहिर्बुध्न्य का।
'**व**' पिनाक का।	'**र्धं**' भवानी पति का।
'**नम्**' कापाली का।	'**उ**' दिकपति का।
'**र्वा**' स्थानु का।	'**रु**' मर्ग का।

'**क**' धाता का। '**मि**' अर्यमा का।
'**व**' मित्रऽदित्य का। '**ब**' वरुणऽदित्य का।
'**न्ध**' अंशु का। '**नात्**' भगऽदित्य का।
'**मृ**' विवस्वान का। '**त्यो**' इन्द्रऽदित्य का।
'**मु**' पूषऽदिव्य का। '**क्षी**' पर्जन्यऽदिव्य का।
'**य**' त्वष्टा का। '**मा**' विष्णुऽदिव्य का।
'**मृ**' प्रजापति का। '**तात**' वषट् का बोधक है।

इस मन्त्र के स्पष्टीकरण में अनेक गूढ़ताएँ हैं क्योंकि यही वो वेदोक्त महामृत्युंजय मन्त्र है जो कि संजीवनी विद्या है।

शब्द ही मन्त्र है और मन्त्र ही शक्ति है। अत: यह जान लेना प्रत्येक तान्त्रिक या तन्त्र को जानने वालों के लिए अत्यधिक आवश्यक है कि यदि शब्द ही मन्त्र है और मन्त्र ही शक्ति है तो गणित के अनुसार—

$$\frac{\text{शब्द}}{\text{मन्त्र}} \times \frac{\text{मन्त्र}}{\text{शक्ति}} = \frac{\text{शब्द}}{\text{शक्ति}}$$

अत: कौन से शब्द की कौन सी शक्ति है?

यहाँ पर मैं इसी द्वात्रिंशाक्षरी वेदोक्त मन्त्र के शब्द की शक्ति का स्पष्टीकरण करता हूँ।

'**त्र**' त्र्यम्बक, त्रि शक्ति तथा त्रिनेत्र का प्रतीक है। यह शब्द तीनों देव अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश की भी शक्ति का प्रतीक है।

'**य**' यम तथा यज्ञ का प्रतीक है।

'**म**' मंगल का द्योतक है।

(यहाँ पर 'य' तथा 'म' को संलग्न करके 'यम' कहे जाने

पर मृत्यु के देवता का प्रतीक हो जाता है।)

'**ब**' बालार्क तेज का बोधक है।

'**कं**' काली का कल्याणमयी बीज है। काली का एकाक्षरी बीज 'क्रीं' है और उन्हें 'ककार' सर्वांगी माना जाता है।

'**य**' उपरोक्त वर्णन के अनुसार यम तथा यज्ञ का द्योतक है।

'**जा**' जालंधरेश का बोधक है।

'**म**' महाशक्ति का बोधक है।

'**हे**' हाकिनी का बोधक है।

'**सु**' सुप्रभात, सुगन्धि तथा सुर का बोधक है।

'**गं**' गणपति बीज होने के साथ-साथ ऋद्धि-सिद्धि का दाता भी है।

'**धिं**' अर्थात् 'ध' धूमावती का बीज है जो कि अलक्ष्मी अर्थात् कंगाली को हटाता है। देह को पुष्ट करता है।

'**म**' महेश का बोधक है।

'**पु**' पुण्डरीकाक्ष का बोधक है।

'**ष्टि**' देह में स्थित षट्कोणों का बोधक है जो कि देह में प्राणों का संचार करते हैं।

'**व**' वाकिनी का द्योतक है।

'**र्ध**' धर्म का द्योतक है।

'**नं**' नंदी का बोधक है।

'**उ**' उमा रूप में पार्वती का बोधक है।

'**र्वा**' शिव के बाँये शक्ति का बोधक है।

'**रु**' रूप तथा आँसू का बोधक है।

'**क**' कल्याणी का द्योतक है।

'**मि**' सूर्य के स्वरूप अर्यमा का बोधक है।

'**व**' वरुण का बोधक है।

'**बं**' बंदी देवी का द्योतक है।

'**ध**' धंदा देवी का द्योतक है। इसके कारण देह के विकास समाप्त होते हैं तथा मांस सड़ता नहीं है।

'**नात्**' सूर्य भगवान् के भग स्वरूप का द्योतक है।

'**मृ**' मृत्युञ्जय का द्योतक है।

'**त्यो**' नित्येश का द्योतक है।

'**मु**' मुक्ति का द्योतक है।

'**क्षी**' क्षेमंकरी का बोधक है।

'**य**' पूर्व वर्णित बोधन।

'**मा**' आने लिए माँग तथा मन्त्रेश का द्योतक है।

'**मृ**' पूर्व वर्णित।

'**तात**' चरणों में स्पर्ण का द्योतक है।

यह पूर्ण विवरण '**देवो भूत्वा देवं यजेत**' के अनुसार पूर्णतः सत्य प्रमाणित हुआ है।

इस मन्त्र का ३२ शब्दों का प्रयोग हुआ है और इसी मन्त्र में 'ॐ' लगा देने से ३३ हो जाते हैं। इसे 'त्रयस्त्रिशाक्षरी मन्त्र' कहते हैं। श्री वसिष्ठ जी ने इन ३३ शब्दों के ३३ देवता अर्थात् शक्तियाँ निश्चित की हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

इस मन्त्र में **८ वसु, ११ रुद्र, १२ आदित्य, १ प्रजापति तथा १ वषट** को माना है।

महामृत्युंजय का तान्त्रिक बीजोक्त मन्त्र निम्नलिखित है—

ॐ भूः ॐ भवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं

पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ॥

महामृत्युंजय का संजीवनी मन्त्र अर्थात् संजीवनी विद्या निम्नलिखित है।

ॐ ह्रौ जूं सः ॐ भूर्भवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौ ॐ॥

महामृत्युञ्जय का एक और प्रभावशाली मन्त्र निम्न है।

ॐ ह्रौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ ह्रौं ॐ॥

अब आप अपनी सुविधा के अनुसार जो भी मन्त्र चाहें चुन लें और नित्य पाठ में या आवश्यकता के समय प्रयोग में लाएँ।

सदा स्मरण रखें कि—जो भी मन्त्र जपना हो उसका जप शुद्ध तथा शुद्धता से करें।

एक निश्चित संख्या में जप करें। पूर्व दिवस में जपे गए मन्त्रों से, आगामी दिनों में कम मन्त्र न जपें। यदि चाहें तो अधिक जप सकते हैं परन्तु स्मरण यही रखना है कि भूतकाल से वर्तमान काल के मन्त्र कम न हो जाएँ।

मन्त्र का उच्चारण होंठों से बाहर नहीं आना चाहिए। यदि अभ्यास न होने के कारण यह विधि न प्रयुक्त हो सके तो धीमे स्वर में जप करें।

जप काल में धूप-दीप जलता रहे।

रुद्राक्ष की माला पर ही जप करें।

माला को गोमुखी में रखें। जब तक पाठ की संख्या पूर्ण न हो, माला को गोमुखी से न निकालें।

जप काल में शिवजी की प्रतिमा, तस्वीर, शिवलिंग या यन्त्र समक्ष रहना अनिवार्य है।

महामृत्युंजय के सभी जप कुश के आसन पर बैठकर करें।

आरती श्री शिव जी की

जय शिव ओंकारा, भज हर शिव ओंकारा,
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धाङ्गी धारा।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै,
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै।
दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अति सोहै,
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन मन मोहे।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी,
चंदन मृगमद चंदा सोहै त्रिपुरारी।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे,
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।
करके मध्ये कमंडलु चक्र त्रिशूलधारी,
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका।
त्रिगुण शिव जी की आरती जो कोई नर गावे,
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे।

श्री शिव पंचाक्षर स्तोत्र

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥
मन्दाकिनी सलिल चन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दार पुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥
शिवाय गौरी वदजाब्ज वृन्द सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय।
श्री नीलकण्ठाय वृष ध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥
वशिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य मुनीन्द्र देवर्चचित शेखराय।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै 'व' कराय नमः शिवाय॥
यक्ष स्वरूपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥
पंचाक्षरमिंद पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सहमोदते॥

ॐ ह्रौं जूं सः भूर्भवः स्वः
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्
ॐ भूर्भवः स्वः जूं ह्रौं ॐ॥

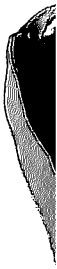

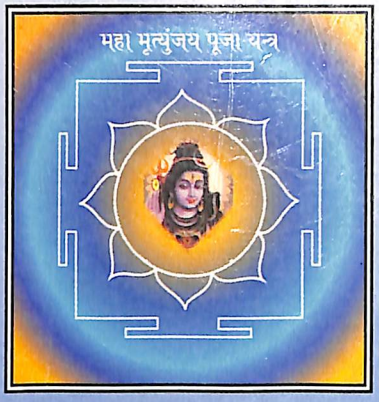

महामृत्युंजय संजीवनी मन्त्र

ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारूकमिवबन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ॥

भावार्थ : हम भगवान् शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवनशक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत् का पालन-पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाए। जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेलरूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है, उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में शरीर का त्याग कर आप में लीन हो जाएँ।

मन्त्र लाभ :

१. यह मन्त्र जीवन प्रदान करता है।

२. यह मन्त्र अकालमृत्यु दुर्घटना आदि से रक्षा करता है।

३. यह सर्प एवं बिच्छू के काटने पर उसका विषशमन करके रक्षा करता है।

४. यह मन्त्र असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त कराता है।

५. यह प्रत्येक रोग को दूर करने का सबसे प्रभावशाली मन्त्र है।